

युवाओं में बढ़ती नशाखोरी की समस्या: कारण और प्रभाव

डॉ. राम धनी पाल

सहायक प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, नालंदा महिला कॉलेज, बिहार शरीफ, नालंदा (बिहार) 803101

सारांश

युवा वर्ग किसी भी समाज और राष्ट्र की रचनात्मक ऊर्जा, सामाजिक परिवर्तन और विकास का मुख्य आधार माना जाता है लेकिन वर्तमान समय में युवाओं में बढ़ती नशाखोरी गंभीर सामाजिक समस्या के रूप में सामने आ रही है। प्रस्तुत शोध-पत्र में नशाखोरी को केवल व्यक्तिगत कमजोरी या बुरी आदत न मानकर सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों से जुड़ी समस्या के रूप में समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन में स्पष्ट किया गया है कि साथियों का दबाव, गलत संगति, बेरोजगारी, पारिवारिक उपेक्षा, मानसिक तनाव, शहरीकरण, उपभोक्तावादी संस्कृति, सोशल मीडिया और नशीले पदार्थों की आसान उपलब्धता युवाओं को नशे की ओर आकर्षित करती है। नशाखोरी का प्रभाव केवल व्यक्ति के शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य तक सीमित नहीं रहता, यह शिक्षा, रोजगार, व्यक्तित्व-विकास, पारिवारिक संबंध, सामाजिक नियंत्रण और सामुदायिक जीवन को भी प्रभावित करता है। इसके कारण पारिवारिक कलह, आर्थिक संकट, शैक्षिक गिरावट, कार्यक्षमता में कमी, अपराध, हिंसा, सामाजिक विघटन और आत्महत्या जैसी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह समस्या सामाजिक विचलन, अनोमी, तनाव, भिन्नात्मक सहचर्य और लेबलिंग जैसी प्रक्रियाओं से संबंधित है। अध्ययन में नशाखोरी की रोकथाम के लिए परिवार, शिक्षण संस्थानों, समाज, सरकार, परामर्श सेवाओं, पुनर्वास केंद्रों और जागरूकता कार्यक्रमों की संयुक्त भूमिका को आवश्यक माना गया है। कहा जा सकता है कि नशामुक्त युवा ही स्वस्थ परिवार, सशक्त समाज और प्रगतिशील राष्ट्र के निर्माण का आधार बन सकते हैं।

मुख्य शब्द: नशाखोरी, युवा, सामाजिक विचलन, पारिवारिक विघटन, मानसिक स्वास्थ्य, सामाजिक नियंत्रण, पुनर्वास।

प्रस्तावना

नशाखोरी वर्तमान समय की उन गंभीर सामाजिक समस्याओं में से एक है, जिसने युवा जीवन की दिशा और गति दोनों को प्रभावित किया है। युवा अवस्था जीवन का वह चरण है जब व्यक्ति अपनी पहचान, लक्ष्य, संबंध और सामाजिक भूमिका का निर्माण करता है। इसी आयु में ऊर्जा, जिज्ञासा, साहस और प्रयोगधर्मिता अधिक होती है। यदि यह ऊर्जा शिक्षा, श्रम, खेल, संस्कृति और रचनात्मक कार्यों में लगती है तो समाज को प्रगतिशील शक्ति प्राप्त होती है; परंतु जब यही ऊर्जा नशे की आदत, गलत संगति और असंयमित जीवन-शैली में खर्च होने लगती है तो व्यक्ति तथा समाज दोनों के सामने गंभीर संकट उत्पन्न होता है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से नशाखोरी को केवल जैविक या मनोवैज्ञानिक निर्भरता नहीं कहा जा सकता। यह सामाजिक व्यवहार, समूह-संबंध, मूल्य-व्यवस्था, सामाजिक नियंत्रण और जीवन-अवसरों से गहराई से जुड़ी हुई समस्या है। किसी युवा का नशे की ओर जाना अक्सर उसकी व्यक्तिगत इच्छा का परिणाम भर नहीं होता, बल्कि उसके आसपास की सामाजिक परिस्थितियाँ भी इस प्रक्रिया को प्रभावित करती हैं। मित्रों का दबाव, परिवार में संवादहीनता, आर्थिक असुरक्षा, बेरोजगारी, प्रतिस्पर्धा, शहरी

अकेलापन, मीडिया में नशे का आकर्षक चित्रण और उपलब्धता की सहजता मिलकर नशाखोरी को बढ़ावा देते हैं।

भारतीय समाज में नशे का प्रश्न जटिल है, क्योंकि कई प्रसंगों में शराब या अन्य मादक पदार्थों का संबंध उत्सव, अतिथि-सत्कार, पुरुषत्व, आधुनिकता या प्रतिष्ठा से जोड़ दिया जाता है। कई बार सामाजिक समूह स्वयं नशे को सामान्य व्यवहार की तरह स्वीकार करने लगते हैं। ऐसी स्थिति में युवा नशे को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त व्यवहार समझ बैठते हैं। धीरे-धीरे प्रयोग आदत में और आदत निर्भरता में बदल जाती है। इसलिए नशाखोरी को समझने के लिए व्यक्ति, परिवार, समूह और व्यापक सामाजिक संरचना सभी स्तरों का अध्ययन आवश्यक है। प्रस्तुत शोध-पत्र में युवाओं में बढ़ती नशाखोरी की समस्या को कारण और प्रभाव के आधार पर विश्लेषित किया गया है। इसमें यह देखने का प्रयास किया गया है कि युवा नशे की ओर क्यों आकर्षित होते हैं, नशाखोरी उनके जीवन के किन-किन पक्षों को प्रभावित करती है तथा इसके समाधान के लिए समाजशास्त्रीय स्तर पर कौन-से उपाय उपयोगी हो सकते हैं।

नशाखोरी की अवधारणा

नशाखोरी से आशय ऐसी अवस्था से है जिसमें व्यक्ति किसी मादक पदार्थ के सेवन पर मानसिक या शारीरिक रूप से निर्भर हो जाता है। प्रारंभिक अवस्था में व्यक्ति जिज्ञासा, आनंद, तनाव-निवारण या समूह में स्वीकार्यता प्राप्त करने के लिए नशीले पदार्थों का सेवन करता है, किंतु नियमित सेवन के बाद उसकी इच्छा-शक्ति कमजोर होने लगती है। वह पदार्थ व्यक्ति की आदत, व्यवहार और दिनचर्या पर नियंत्रण स्थापित कर लेता है। यही स्थिति व्यसन या नशाखोरी कहलाती है। मादक पदार्थों में शराब, तंबाकू, गांजा, भांग, अफीम, चरस, हेरोइन, कोकीन, सिंथेटिक ड्रग्स और कई प्रकार की उत्तेजक या शिथिलकारी दवाएँ शामिल की जाती हैं। इन पदार्थों का प्रभाव शरीर, मस्तिष्क और व्यवहार पर अलग-अलग प्रकार से पड़ता है। कुछ पदार्थ व्यक्ति को उत्तेजित करते हैं, कुछ उसकी चेतना को शिथिल करते हैं, कुछ भ्रम की स्थिति उत्पन्न करते हैं और कुछ उसे क्षणिक आनंद या राहत का अनुभव कराते हैं। समस्या तब गंभीर हो जाती है जब व्यक्ति सामान्य जीवन की चुनौतियों का सामना करने के बजाय इन पदार्थों पर निर्भर होने लगता है।

समाजशास्त्रीय अर्थ में नशाखोरी सामाजिक विचलन का रूप धारण कर सकती है। विचलन वह व्यवहार है जो समाज के स्वीकृत मानदंडों से अलग हो और सामाजिक जीवन में असंतुलन पैदा करे। नशे की स्थिति में व्यक्ति परिवार, शिक्षा, कार्यस्थल और समाज के नियमों की उपेक्षा करने लगता है। वह आर्थिक संसाधनों का दुरुपयोग करता है, संबंधों में तनाव पैदा करता है और कभी-कभी अपराध, हिंसा या असामाजिक व्यवहार की ओर भी बढ़ता है। नशाखोरी को मात्र स्वास्थ्य-समस्या मानना पर्याप्त नहीं है; इसे सामाजिक व्यवस्था, सामाजिक नियंत्रण और सामुदायिक जीवन से जुड़ी व्यापक सामाजिक समस्या के रूप में समझा जाना चाहिए।

साहित्य समीक्षा

युवाओं में बढ़ती नशाखोरी की समस्या पर हुए विभिन्न अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि यह केवल व्यक्तिगत आदत नहीं है, यह सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक कारकों से जुड़ी गंभीर सामाजिक समस्या है। SCERT, Delhi द्वारा प्रकाशित Capacity Building Programme on 'Substance Abuse', 'संवाद से संकल्प' पुस्तक मादक पदार्थों के दुरुपयोग को नैतिक कमजोरी के बजाय स्वास्थ्य, व्यवहार और सामाजिक परिवेश से जुड़ी समस्या के रूप में प्रस्तुत करती है। पुस्तक में स्पष्ट किया गया है कि नशे की निर्भरता मस्तिष्क और व्यवहार

को प्रभावित करने वाली व्याधि है, जिसके पीछे जैविक, आनुवांशिक और पर्यावरणीय कारण हो सकते हैं। इसमें किशोरों में नशे के कारणों, जैसे जिज्ञासा, मनोरंजन, अकादमिक तनाव, पारिवारिक कलह और साथियों के दबाव को रेखांकित किया गया है। साथ ही शिक्षकों की भूमिका, प्रारंभिक पहचान, संवाद, परामर्श और रचनात्मक गतिविधियों को रोकथाम के प्रभावी उपाय माना गया है।

डॉ. अखिलेश कुमार ने नशे की समस्या को समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से देखते हुए इसे सार्वजनिक स्वास्थ्य और सामाजिक ताने-बाने के लिए गंभीर चुनौती माना है। उनके अनुसार भारत की भौगोलिक स्थिति भी मादक पदार्थों की तस्करी के संदर्भ में संवेदनशील है, क्योंकि भारत गोल्डन क्रिसेंट और गोल्डन ट्रायंगल जैसे प्रमुख मादक पदार्थ उत्पादक क्षेत्रों के बीच स्थित है। अध्ययन में यह भी बताया गया है कि नशे की लत घरेलू हिंसा, अपराध, गरीबी और सामाजिक विघटन को बढ़ाती है। लेखक ने नशे को 'लहर प्रभाव' के रूप में देखा है, जहाँ एक व्यक्ति की लत केवल उसी को नहीं, उसके आसपास के लोगों और पूरे सामाजिक वातावरण को प्रभावित करती है।

प्रमोद कुमार सिंह ने युवाओं में बढ़ते नशे की प्रवृत्ति को सामाजिक परिवर्तन, बेरोजगारी, फैशन और मानसिक तनाव से जोड़ा है। उनके अनुसार युवा वर्ग किसी भी राष्ट्र की वास्तविक शक्ति होता है, लेकिन आधुनिक समय में नशा युवाओं के लिए फैशन का रूप लेता जा रहा है। अध्ययन में यह भी कहा गया है कि बेरोजगारी और निराशा युवाओं को नशे की ओर धकेलती है। नशे के कारण चोरी, हिंसा, बलात्कार, आत्महत्या और अन्य अपराधों में वृद्धि जैसी समस्याएँ समाज के सामने आती हैं। लेखक का दृष्टिकोण स्पष्ट करता है कि नशाखोरी सामाजिक विचलन और अपराध-वृद्धि से निकट रूप से जुड़ी हुई समस्या है।

शिवम सिंह एवं आलोक कुमार कश्यप ने युवाओं में बढ़ती नशाखोरी की प्रवृत्ति को साथियों के दबाव, गलत संगति, जिज्ञासा, मानसिक तनाव और नशीले पदार्थों की उपलब्धता से संबंधित माना है। उनके अनुसार नशाखोरी विशेष रूप से युवा अवस्था में इसलिए बढ़ती है, क्योंकि यह अवस्था उत्सुकता, प्रभाव ग्रहणशीलता और सामाजिक दबाव से अधिक प्रभावित होती है। अध्ययन में नशे के प्रभावों को शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक और सामाजिक स्तर पर देखा गया है तथा नशा-मुक्त भारत अभियान, जागरूकता, पुनर्वास और कानूनी नियंत्रण को रोकथाम के उपायों के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

जानकी यादव ने युवाओं में नशाखोरी के कारण और परिणाम का अध्ययन करते हुए इसे ऐतिहासिक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक दृष्टि से समझाया है। उनके अनुसार प्राचीन समय से मादक पदार्थों का प्रयोग समाज में विभिन्न रूपों में होता रहा है लेकिन आधुनिक समय में इसका अनियंत्रित प्रयोग गंभीर समस्या बन गया है। अध्ययन में सामाजिक प्रतिष्ठा, फैशन, मानसिक तनाव, पारिवारिक स्नेह का अभाव, पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव, आर्थिक कारण और नशीले पदार्थों की उपलब्धता को प्रमुख कारण माना गया है। इसके परिणामों में वैयक्तिक विघटन, दुर्घटना, दुर्व्यवहार, कार्यक्षमता में कमी, सामाजिक एवं पारिवारिक विघटन, गरीबी, बेरोजगारी, अपराध और आत्महत्या जैसी समस्याएँ शामिल हैं।

शोध उद्देश्य

1. युवाओं में नशाखोरी की बढ़ती प्रवृत्ति के प्रमुख सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक और मनोवैज्ञानिक कारणों का अध्ययन करना।
2. नशाखोरी के कारण युवाओं के शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्थिति, शिक्षा, रोजगार और व्यक्तित्व विकास

पर पड़ने वाले प्रभावों का विश्लेषण करना।

3. नशाखोरी से परिवार और समाज पर उत्पन्न होने वाली समस्याओं को समझते हुए इसके नियंत्रण, रोकथाम और समाधान के प्रभावी उपायों का सुझाव देना।

अध्ययन पद्धति

प्रस्तुत शोध-पत्र वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक शोध-पद्धति पर आधारित है। वर्णनात्मक पद्धति के अंतर्गत युवाओं में नशाखोरी की प्रकृति, स्वरूप, कारणों और प्रभावों का व्यवस्थित विवरण प्रस्तुत किया गया है। विश्लेषणात्मक पद्धति के अंतर्गत उपलब्ध सामग्री के आधार पर यह समझने का प्रयास किया गया है कि नशाखोरी किस प्रकार सामाजिक संरचना, सांस्कृतिक मूल्यों, परिवार, मित्र-समूह और आर्थिक परिस्थितियों से संबंधित है। इस अध्ययन में द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है। विषय से संबंधित पुस्तकों, शोध-पत्रों, पत्र-पत्रिकाओं, रिपोर्टों और विश्वसनीय इंटरनेट स्रोतों का अध्ययन किया गया है। अध्ययन की मुख्य इकाई युवा वर्ग है, क्योंकि यह वर्ग सामाजिक परिवर्तन, शिक्षा, रोजगार और सांस्कृतिक प्रभावों के प्रति अधिक संवेदनशील होता है। अध्ययन की सीमा यह है कि इसमें प्रत्यक्ष क्षेत्रीय सर्वेक्षण, साक्षात्कार या प्रश्नावली का उपयोग नहीं किया गया है। अतः निष्कर्ष उपलब्ध साहित्य और प्रकाशित सामग्री के विश्लेषण पर आधारित हैं। इसके बावजूद यह अध्ययन नशाखोरी को समाजशास्त्रीय दृष्टि से समझने और समाधान की दिशा में विचार करने के लिए उपयोगी आधार प्रस्तुत करता है।

सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य

समाजशास्त्र में नशाखोरी को सामाजिक विचलन, अनोमी, सामाजिक अधिगम, लेबलिंग और सामाजिक विघटन जैसे सिद्धांतों के आधार पर समझा जा सकता है। एमिल दुर्खीम के अनोमी सिद्धांत के अनुसार जब समाज में नियम, मूल्य और नियंत्रण कमजोर पड़ जाते हैं तो व्यक्ति दिशाहीनता का अनुभव करता है। आधुनिक प्रतिस्पर्धी समाज में युवाओं पर सफलता, उपभोग, प्रतिष्ठा और प्रदर्शन का दबाव बढ़ा है। जब उनकी आकांक्षाएँ और वास्तविक अवसरों में अंतर बढ़ता है तो तनाव और निराशा पैदा होती है। ऐसी स्थिति में कुछ युवा नशे को पलायन या अस्थायी राहत का साधन मानने लगते हैं।

रॉबर्ट मर्टन के तनाव सिद्धांत से भी नशाखोरी की व्याख्या की जा सकती है। समाज युवाओं के सामने सफलता, धन, प्रतिष्ठा और जीवन-स्तर के आदर्श प्रस्तुत करता है, परंतु सभी युवाओं को समान अवसर उपलब्ध नहीं होते। जब सामाजिक लक्ष्य तो ऊँचे होते हैं परंतु वैध साधनों तक पहुँच सीमित होती है, तो व्यक्ति विचलित व्यवहार की ओर जा सकता है। नशाखोरी इसी तनाव को कम करने का गलत और विनाशकारी माध्यम बन जाती है।

एडविन सदरलैंड के भिन्नात्मक सहचर्य सिद्धांत के अनुसार व्यक्ति विचलित व्यवहार अपने निकट संबंधों और समूहों से सीखता है। यदि किसी युवा की मित्र-मंडली में नशा सामान्य व्यवहार माना जाता है, तो वह भी इसे अपनाने की संभावना रखता है। समूह में स्वीकार्यता की चाह, मजाक उड़ाए जाने का भय और आधुनिक दिखने की इच्छा उसे नशे की शुरुआत तक ले जाती है। बाद में यही समूह व्यवहार व्यक्तिगत निर्भरता में बदल सकता है।

लेबलिंग सिद्धांत यह बताता है कि यदि किसी युवा को समाज बार-बार 'नशेड़ी', 'अपराधी' या 'असफल' कहकर चिह्नित करता है, तो वह स्वयं को उसी पहचान में देखने लगता है। ऐसे में सुधार की संभावना कम और विचलन की स्थिरता अधिक हो सकती है। इसलिए नशाखोरी से ग्रस्त युवाओं के प्रति केवल निंदा या बहिष्कार का व्यवहार

समाधानकारी नहीं है। उन्हें सम्मानजनक परामर्श, उपचार, पुनर्वास और सामाजिक पुनर्स्वीकार की आवश्यकता होती है।

युवाओं में नशाखोरी के प्रमुख कारण

युवाओं में नशाखोरी की समस्या किसी एक कारण से उत्पन्न नहीं होती, इसके पीछे सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियाँ एक साथ कार्य करती हैं। युवा अवस्था व्यक्तित्व-निर्माण, पहचान-बोध और सामाजिक स्वीकृति प्राप्त करने की अवस्था होती है। इस समय मित्र-समूह का प्रभाव अत्यंत गहरा होता है। कई बार युवा अपने साथियों के व्यवहार, आदतों और जीवन-शैली को अपनाकर स्वयं को समूह का हिस्सा सिद्ध करना चाहता है। यदि मित्र-समूह में नशे को साहस, आनंद, आधुनिकता या प्रतिष्ठा का प्रतीक माना जाता है, तो युवा उससे प्रभावित होकर नशीले पदार्थों का प्रयोग कर सकता है। प्रारंभ में यह प्रयोग जिज्ञासा, दबाव या मनोरंजन के रूप में होता है, परंतु धीरे-धीरे बार-बार का प्रयोग आदत और फिर लत का रूप ले लेता है।

पारिवारिक वातावरण भी युवाओं के व्यवहार को गहराई से प्रभावित करता है। जिस परिवार में संवाद की कमी, माता-पिता की उपेक्षा, अत्यधिक कठोर अनुशासन, घरेलू कलह, आर्थिक तनाव या भावनात्मक असुरक्षा होती है, वहाँ युवा मानसिक रूप से अस्थिर और अकेला अनुभव कर सकता है। जब घर में विश्वासपूर्ण संबंधों का अभाव होता है, तो युवा अपनी समस्याओं को परिवार के साथ साझा नहीं कर पाता। ऐसी स्थिति में वह भावनात्मक सहारे की खोज घर से बाहर करता है और कई बार गलत संगति के संपर्क में आ जाता है। यदि परिवार के बड़े सदस्य स्वयं नशे का सेवन करते हैं, तो युवा के लिए नशा सामान्य और स्वीकार्य व्यवहार प्रतीत होने लगता है। इस प्रकार परिवार की संरचना, वातावरण और व्यवहार-पद्धति नशाखोरी की प्रवृत्ति को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से बढ़ा सकती है।

शिक्षा, रोजगार और भविष्य से जुड़ी अनिश्चितताएँ भी युवाओं में नशाखोरी को बढ़ावा देती हैं। वर्तमान समय में प्रतिस्पर्धा बहुत तीव्र हो गई है। अनेक युवा पढ़ाई के दबाव, परीक्षाओं में असफलता, करियर की चिंता, बेरोजगारी और आर्थिक निर्भरता से तनावग्रस्त रहते हैं। जब निरंतर प्रयासों के बाद भी अपेक्षित परिणाम प्राप्त नहीं होता, तो उनमें निराशा, आत्महीनता और असुरक्षा की भावना बढ़ने लगती है। ऐसी मानसिक स्थिति में नशा उन्हें क्षणिक राहत या तनाव से बचने का साधन प्रतीत होता है। यह राहत वास्तविक समाधान नहीं होती, यह धीरे-धीरे समस्या को और गंभीर बना देती है।

आधुनिक उपभोक्तावादी संस्कृति ने भी युवाओं के जीवन-मूल्यों को प्रभावित किया है। विज्ञापनों, फिल्मों, पार्टियों, सोशल मीडिया और लोकप्रिय संस्कृति में कई बार शराब या अन्य नशीले पदार्थों को आनंद, स्वतंत्रता, आकर्षण, आधुनिकता और उच्च जीवन-शैली से जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है। युवा इस प्रतीकात्मक छवि से प्रभावित होकर नशे को सामाजिक मेल-जोल, उत्सव या आधुनिक जीवन का हिस्सा मानने लगते हैं। जब समाज में किसी व्यवहार को सांस्कृतिक स्वीकृति मिलने लगती है, तो उसके प्रति अपराध-बोध कम और आकर्षण अधिक हो जाता है। यही कारण है कि कई युवा नशे की शुरुआत को गंभीर समस्या न मानकर सामान्य व्यवहार समझ लेते हैं।

नशीले पदार्थों की आसान उपलब्धता इस समस्या को और अधिक जटिल बनाती है। जिन क्षेत्रों में शराब, तंबाकू, ड्रग्स या नशीली दवाएँ सरलता से उपलब्ध होती हैं, वहाँ युवाओं के इनके संपर्क में आने की संभावना बढ़ जाती है। स्कूलों, कॉलेजों और छात्र-आवासों के आसपास तंबाकू या अन्य नशीले पदार्थों की बिक्री युवाओं के व्यवहार को प्रभावित कर सकती है। इंटरनेट, ऑनलाइन संपर्क और अवैध आपूर्ति-श्रृंखलाएँ भी नशे की उपलब्धता को बढ़ाती

हैं। जब किसी पदार्थ तक पहुँच आसान हो जाती है, तो उसके प्रयोग को रोकना और नियंत्रण करना कठिन हो जाता है।

मानसिक तनाव, भावनात्मक अकेलापन और सामाजिक तुलना भी नशाखोरी के महत्वपूर्ण कारण हैं। बदलते पारिवारिक संबंध, एकल जीवन, डिजिटल निर्भरता और सोशल मीडिया पर लगातार तुलना ने युवाओं में अकेलेपन और असंतोष की भावना को बढ़ाया है। कई युवा असफलता, प्रेम-संबंधों में तनाव, आत्मविश्वास की कमी, अवसाद या चिंता जैसी स्थितियों से जूझते हैं। उचित परामर्श, भावनात्मक सहयोग और सकारात्मक संवाद के अभाव में वे नशे को आत्म-चिकित्सा की तरह अपनाने लगते हैं। यह आत्म-चिकित्सा धीरे-धीरे आत्म-विनाश का कारण बन सकती है, क्योंकि नशा तनाव को कम करने के बजाय व्यक्ति की मानसिक, शारीरिक और सामाजिक समस्याओं को और बढ़ा देता है।

समाज में नियंत्रण और मार्गदर्शन की शिथिलता भी युवाओं को नशे की ओर धकेल सकती है। परिवार, विद्यालय, समुदाय और स्थानीय नेतृत्व यदि युवाओं के व्यवहार पर सकारात्मक निगरानी नहीं रखते, तो विचलित व्यवहार बढ़ने की संभावना अधिक हो जाती है। सामाजिक नियंत्रण का अर्थ दमन या कठोरता नहीं है, यह उचित मार्गदर्शन, अनुशासन, संवाद, मूल्य-निर्माण और सहयोग है। जहाँ ये तंत्र कमजोर हो जाते हैं, वहाँ युवा सही और गलत के बीच संतुलित निर्णय लेने में कठिनाई अनुभव करते हैं। परिणामस्वरूप नशाखोरी जैसी समस्याएँ धीरे-धीरे व्यक्तिगत आदत से आगे बढ़कर सामाजिक समस्या का रूप धारण कर लेती हैं।

नशाखोरी के शारीरिक और मानसिक प्रभाव

नशाखोरी का सबसे प्रत्यक्ष प्रभाव शरीर पर पड़ता है। नियमित नशे से शरीर की प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, पाचन-तंत्र, यकृत, फेफड़ों, हृदय और तंत्रिका-तंत्र पर गंभीर दुष्प्रभाव पड़ते हैं। तंबाकू और धूम्रपान से कैंसर, श्वास-रोग और हृदय-रोग की संभावना बढ़ती है। शराब यकृत, मस्तिष्क और पाचन-तंत्र को प्रभावित करती है। ड्रग्स का लगातार सेवन शरीर को निर्भर बना देता है और पदार्थ न मिलने पर बेचैनी, दर्द, चिड़चिड़ापन तथा असामान्य व्यवहार उत्पन्न हो सकता है।

मानसिक स्तर पर नशा निर्णय-क्षमता, स्मरण-शक्ति, एकाग्रता और आत्म-नियंत्रण को कमजोर करता है। युवा पढ़ाई, काम और सामाजिक दायित्वों पर ध्यान नहीं दे पाते। उनमें चिड़चिड़ापन, अवसाद, आक्रामकता, संदेह, भावनात्मक असंतुलन और आत्मविश्वास की कमी देखी जा सकती है। कुछ मामलों में नशा आत्मघाती प्रवृत्तियों, हिंसक व्यवहार और गहरे मानसिक रोगों को भी जन्म दे सकता है। नशाखोरी व्यक्ति की आत्म-छवि को भी प्रभावित करती है। जब युवा अपने लक्ष्य से भटकता है और नशे पर निर्भरता महसूस करता है, तो उसके भीतर अपराध-बोध, आत्महीनता और असफलता की भावना बढ़ती है। समाज द्वारा तिरस्कार मिलने पर यह स्थिति और गंभीर हो जाती है। इस प्रकार नशा केवल शरीर को नहीं, बल्कि चेतना, भावनाओं और व्यक्तित्व की संरचना को भी क्षीण करता है।

शिक्षा, रोजगार और व्यक्तित्व-विकास पर प्रभाव

युवा जीवन में शिक्षा का विशेष महत्व है। शिक्षा व्यक्ति को ज्ञान, अनुशासन, मूल्य और जीवन-अवसर प्रदान करती है। नशाखोरी इस प्रक्रिया को बाधित करती है। नशे की आदत के कारण विद्यार्थी नियमित अध्ययन से दूर हो जाते हैं, कक्षाओं में अनुपस्थिति बढ़ती है, परीक्षा-प्रदर्शन कमजोर होता है और उच्च शिक्षा की संभावनाएँ सीमित हो जाती हैं। नशा एकाग्रता और स्मरण-शक्ति को प्रभावित करता है, जिससे सीखने की क्षमता घटती है।

रोजगार के क्षेत्र में भी नशाखोरी गंभीर बाधा बनती है। नशे का आदी युवा समय-पालन, अनुशासन, जिम्मेदारी और कार्यकुशलता में पिछड़ने लगता है। कार्यस्थल पर अस्थिर व्यवहार, अनुपस्थिति, दुर्घटना की संभावना और निर्णय-क्षमता की कमी उसके रोजगार को खतरे में डालती है। नौकरी छूटने या रोजगार न मिलने की स्थिति में आर्थिक संकट बढ़ता है और यही संकट फिर नशे को बढ़ाने वाला कारण बन जाता है। इस प्रकार कारण और परिणाम का दुष्चक्र तैयार हो जाता है। व्यक्तित्व-विकास की दृष्टि से नशाखोरी आत्म-नियंत्रण, आत्मविश्वास, लक्ष्यबोध और सामाजिक अनुकूलन को कमजोर करती है। स्वस्थ व्यक्तित्व के लिए अनुशासन, संवेदनशीलता, जिम्मेदारी और संतुलित व्यवहार आवश्यक हैं, जबकि नशाखोरी व्यक्ति को असंयम, पलायन और अव्यवस्थित जीवन की ओर ले जाती है। युवा अपने परिवार और समाज के प्रति उत्तरदायित्वों को भूलने लगता है। इससे उसका सामाजिक चरित्र कमजोर होता है और वह अपनी रचनात्मक क्षमता का उपयोग नहीं कर पाता।

पारिवारिक और सामाजिक प्रभाव

नशाखोरी का प्रभाव परिवार पर अत्यंत गंभीर होता है। नशे के कारण परिवार में आर्थिक संसाधनों का दुरुपयोग होता है। परिवार की आय शिक्षा, स्वास्थ्य, भोजन और भविष्य-निर्माण पर खर्च होने के बजाय नशीले पदार्थों पर खर्च होने लगती है। इससे परिवार में तनाव, विवाद और असुरक्षा बढ़ती है। कई बार नशे की स्थिति में व्यक्ति हिंसक या अपमानजनक व्यवहार करता है, जिससे घरेलू वातावरण अस्थिर हो जाता है। पारिवारिक विघटन का एक कारण विश्वास का टूटना भी है। जब युवा परिवार से झूठ बोलकर, चोरी करके या आर्थिक दबाव बनाकर नशे की जरूरत पूरी करने का प्रयास करता है, तो पारिवारिक संबंधों में दरार आती है। माता-पिता और भाई-बहनों के साथ उसका संबंध तनावपूर्ण हो जाता है। विवाह और भावी पारिवारिक जीवन पर भी इसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

सामाजिक स्तर पर नशाखोरी अपराध और असामाजिक व्यवहार को बढ़ा सकती है। नशे की आवश्यकता पूरी करने के लिए चोरी, झूठ, हिंसा, जुआ, अवैध गतिविधियों या अपराध की ओर झुकाव पैदा हो सकता है। नशे की स्थिति में सड़क-दुर्घटनाएँ, झगड़े और सार्वजनिक अनुशासनहीनता भी बढ़ती है। इससे समाज में भय, अविश्वास और असुरक्षा का वातावरण बनता है। नशाखोरी सामाजिक नियंत्रण को कमजोर करती है। समाज नियमों, मूल्यों और नैतिक मानदंडों के आधार पर चलता है। जब युवा इन मानदंडों की उपेक्षा करने लगते हैं, तो सामाजिक व्यवस्था में अव्यवस्था पैदा होती है। समुदाय में उनकी प्रतिष्ठा घटती है और वे मुख्यधारा से कटने लगते हैं। इस बहिष्करण से समस्या और बढ़ सकती है, क्योंकि सामाजिक अलगाव व्यक्ति को पुनः नशे की ओर धकेलता है। राष्ट्रीय स्तर पर भी नशाखोरी का प्रभाव देखा जा सकता है। युवा शक्ति किसी राष्ट्र की उत्पादक पूँजी है। यदि बड़ी संख्या में युवा नशे की गिरफ्त में आ जाते हैं तो शिक्षा, श्रम, स्वास्थ्य, कानून-व्यवस्था और आर्थिक विकास पर बोझ बढ़ता है। इसलिए नशाखोरी व्यक्तिगत समस्या ही नहीं, राष्ट्र-निर्माण से जुड़ी चुनौती है।

रोकथाम एवं समाधान

नशाखोरी की रोकथाम के लिए सबसे पहले परिवार की भूमिका महत्वपूर्ण है। परिवार को युवाओं के साथ संवादपूर्ण, सहयोगी और संवेदनशील संबंध विकसित करने चाहिए। केवल डाँट, भय या दंड से समस्या का समाधान नहीं होता। माता-पिता को युवाओं की भावनाओं, मित्र-मंडली, तनाव और आकांक्षाओं को समझना चाहिए। घर में नशा-मुक्त वातावरण और सकारात्मक अनुशासन का निर्माण आवश्यक है।

शिक्षण संस्थानों की भूमिका भी केंद्रीय है। विद्यालयों और महाविद्यालयों में नशा-विरोधी जागरूकता कार्यक्रम,

परामर्श सेवा, जीवन-कौशल शिक्षा, खेल-कूद, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और मानसिक स्वास्थ्य सहायता उपलब्ध होनी चाहिए। युवाओं को यह समझाना आवश्यक है कि नशा स्वतंत्रता या आधुनिकता का प्रतीक नहीं, यह आत्म-विनाश की प्रक्रिया है। पाठ्यक्रम में नशे के दुष्परिणामों और स्वस्थ जीवन-शैली से संबंधित सामग्री को शामिल किया जा सकता है। समुदाय और समाज को भी नशाखोरी के विरुद्ध सक्रिय होना चाहिए। स्थानीय स्तर पर युवा मंडल, स्वयंसेवी संस्थाएँ, धार्मिक-सांस्कृतिक संगठन और पंचायतें जागरूकता अभियान चला सकती हैं। ऐसे अभियान केवल भाषणों तक सीमित न हों, बल्कि खेल, रोजगार-मार्गदर्शन, कला, पुस्तकालय, कौशल-विकास और समूह-परामर्श जैसी गतिविधियों से जुड़े हों। जब युवाओं को रचनात्मक मंच मिलते हैं तो वे नकारात्मक प्रवृत्तियों से दूर रह सकते हैं।

सरकार और प्रशासन की भूमिका नशीले पदार्थों की उपलब्धता पर नियंत्रण, अवैध व्यापार पर कठोर कार्रवाई, पुनर्वास केंद्रों की स्थापना और उपचार सुविधाओं के विस्तार में है। कानून आवश्यक है, परंतु कानून के साथ उपचार और पुनर्वास की व्यवस्था भी उतनी ही जरूरी है। नशे से ग्रस्त युवाओं को अपराधी मानकर छोड़ देना उचित नहीं; उन्हें रोगी और सामाजिक सहायता की आवश्यकता वाले व्यक्ति के रूप में भी देखना चाहिए। मीडिया और डिजिटल प्लेटफॉर्म की भी जिम्मेदारी है कि वे नशे को आकर्षक जीवन-शैली के रूप में प्रस्तुत न करें। फिल्मों, धारावाहिकों और सोशल मीडिया में नशे के दुष्परिणामों को यथार्थ रूप में दिखाया जाना चाहिए। सकारात्मक आदर्श, नशा छोड़ चुके युवाओं की कहानियाँ और स्वास्थ्यपूर्ण जीवन-शैली को बढ़ावा देने वाली सामग्री समाज में प्रभावी भूमिका निभा सकती है।

पुनर्वास की प्रक्रिया में परामर्श, चिकित्सा, परिवार का सहयोग, व्यावसायिक प्रशिक्षण और सामाजिक पुनर्स्वीकार शामिल होना चाहिए। नशा छोड़ने वाले युवा को समाज में सम्मानजनक स्थान मिले, यह अत्यंत आवश्यक है। यदि उसे तिरस्कार, अविश्वास और बहिष्कार ही मिलेगा तो वह पुनः पुराने समूह और पुरानी आदतों की ओर लौट सकता है। इसलिए समाधान का आधार दंड से अधिक सुधार, उपचार और सामाजिक पुनर्समावेशन होना चाहिए।

निष्कर्ष

युवाओं में बढ़ती नशाखोरी की समस्या आधुनिक समाज की जटिल और बहुआयामी चुनौती है। यह समस्या व्यक्ति के शरीर या मन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि परिवार, शिक्षा, रोजगार, सामाजिक संबंध, कानून-व्यवस्था और राष्ट्रीय विकास तक अपना प्रभाव फैलाती है। समाजशास्त्रीय दृष्टि से यह स्पष्ट है कि नशाखोरी का संबंध सामाजिक परिस्थितियों, समूह-संबंधों, आर्थिक दबावों, सांस्कृतिक प्रतीकों और सामाजिक नियंत्रण की स्थिति से है। युवा नशे की ओर प्रायः जिज्ञासा, साथियों के दबाव, तनाव, असफलता, पारिवारिक उपेक्षा, बेरोजगारी और उपलब्धता की सहजता के कारण आकर्षित होते हैं। प्रारंभिक सेवन धीरे-धीरे व्यसन में बदल जाता है और फिर व्यक्ति की दिनचर्या, सोच, संबंधों और भविष्य पर नियंत्रण स्थापित कर लेता है। इसके कारण शिक्षा बाधित होती है, कार्यक्षमता घटती है, परिवार टूटता है, सामाजिक प्रतिष्ठा कम होती है और अपराध या विचलित व्यवहार की संभावना बढ़ती है।

समाधान के लिए केवल कानूनी निषेध पर्याप्त नहीं है। परिवार में संवाद, विद्यालयों में जीवन-कौशल शिक्षा, समाज में जागरूकता, रोजगार के अवसर, मानसिक स्वास्थ्य सहायता, पुनर्वास केंद्र और नशीले पदार्थों की उपलब्धता पर नियंत्रण, इन सभी उपायों की संयुक्त आवश्यकता है। नशाखोरी से ग्रस्त युवाओं को उपेक्षित करने के बजाय उन्हें उपचार, परामर्श और सामाजिक पुनर्स्वीकार का अवसर देना चाहिए। अंततः कहा जा सकता है कि युवा शक्ति को नशे के दुष्चक्र से मुक्त रखना समाज और राष्ट्र दोनों की प्राथमिक जिम्मेदारी है। यदि युवाओं की ऊर्जा को शिक्षा,

श्रम, सृजन, खेल, संस्कृति और सामाजिक सेवा की दिशा में लगाया जाए तो वे केवल स्वयं का ही नहीं, अपितु पूरे समाज का भविष्य सुरक्षित कर सकते हैं। नशामुक्त युवा ही स्वस्थ परिवार, सशक्त समाज और प्रगतिशील राष्ट्र के आधार बन सकते हैं।

संदर्भ सूची

1. State Council of Educational Research and Training (SCERT), Delhi. (2018). Capacity Building Programme on "Substance Abuse": संवाद से संकल्प (pp 1-21). New Delhi: SCERT, Delhi..
2. सिंह, शिवम एवं कश्यप, आलोक कुमार. (2025). युवाओं में बढ़ती नशाखोरी की प्रवृत्ति: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. Journal of Socio-Educational & Cultural Research, 11(23), 67-72.
3. यादव, जानकी. (2025). युवाओं में नशाखोरी का कारण एवं परिणाम: एक अध्ययन. International Journal of Humanities and Social Science Research, 11(2), 12-14.
4. कुमार, अखिलेश. (2024). नशे की समस्या कितनी गंभीर: एक समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण. International Journal of Social Science Research, 1(6), 46-53.
5. द्विवेदी, सुनीत कुमार एवं द्विवेदी, महानंद. (2025). युवाओं में मादक पदार्थों के व्यसन से मनोदशा एवं सामाजिक विघटन में सार्थकता का अध्ययन. International Journal of Multidisciplinary Trends, 7(1), 01-03. <https://doi.org/10.22271/multi.2025.v7.i1a.555>
6. संजय. (2019). युवाओं में नशे के कारण गिरता शिक्षा का स्तर: एक समाजशास्त्रीय अध्ययन. Research Review International Journal of Multidisciplinary, 4(3), 1177-1178.
7. सिंह, प्रमोद कुमार. (2024). युवा वर्ग में बढ़ते नशे की प्रवृत्ति का एक समाज वैज्ञानिक अध्ययन. Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal, 7(3), 01-12.
8. दीक्षित, रजनी. (2019). उच्च एवं निम्न वर्ग के युवाओं में बढ़ती नशे की प्रवृत्ति, उनके कारणों तथा जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन. शोध मंथन, 10(4), 1166-1170.
9. गुप्ता, एम. एल. एवं शर्मा, डी. डी. (2001). समाजशास्त्र. आगरा: साहित्य भवन पब्लिकेशन.
10. बघेल, डी. एस. एवं बघेल, किरण. (2019). समाजशास्त्र. भोपाल: कैलाश पुस्तक सदन.
11. दुर्खीम, एमिल. (1951). Suicide: A Study in Sociology. New York: Free Press.
12. मर्टन, रॉबर्ट के. (1968). Social Theory and Social Structure. New York: Free Press.
13. सदरलैंड, एडविन एच. एवं क्रेसी, डोनाल्ड आर. (1978). Criminology. Philadelphia: Lippincott.
14. Becker, Howard S. (1963). Outsiders: Studies in the Sociology of Deviance. New York: Free Press.